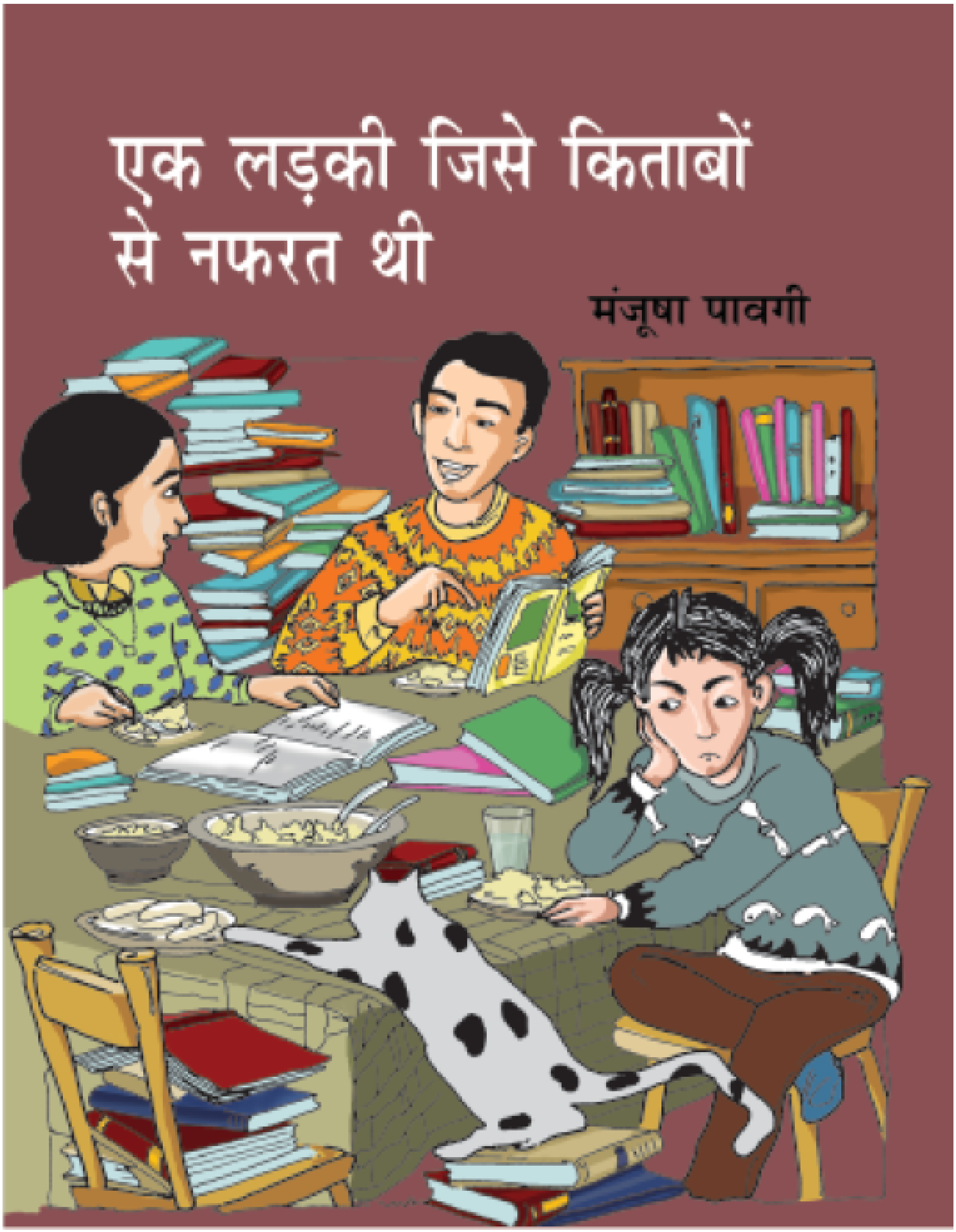

The Girl Who Hated Books

By Manjusha Pawagi

एक लड़की जिसे किताबों से नफरत थी

मंजूषा पावगी

The Girl Who Hated Books

By Manjusha Pawagi

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

एक लड़की जिसे किताबों से नफरत थी	**The Girl Who Hated Books**
मंजूषा पावगी	***Manjusha Pawagi***
हिंदी अनुवाद	***Hindi Translation***
अरविन्द गुप्ता	Arvind Gupta
कॉपी संपादक	***Copy Editor***
राधेश्याम मंगोलपुरी	Radheshyam Mangolpuri
रेखांकन	***Illustration***
(लेनी फ्रैनसन के मूल चित्रों पर आधारित)	*(Based on original Illustrations by Leanne Franson)*
ज्योति हिरेमठ	Jyoti Hiremath
ग्राफिक्स	***Graphics***
अभय कुमार झा	Abhay Kumar Jha
कवर डिजाइन और लेआउट	***Cover Design & Layout***
गॉडफ्रे दास	Godfrey Das
प्रथम संस्करण	***First Edition***
अक्टूबर 2007	October 2007
सहयोग राशि	***Contributory Price***
15 रुपये	Rs. 15.00
मुद्रण	***Printing***
सन साइन ऑफसेट	Sun Shine Offset
नई दिल्ली - 110 018	New Delhi - 110 018

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS OCT 2007 2K 1500 NJVA 0045/2007

एक लड़की
जिसे किताबों से नफरत थी

The Girl Who Hated Books

एक लड़की थी जिसका नाम था मीना। अगर आप किसी पुरानी संस्कृत की किताब में मीना के मायने खोजेंगे तो आप पाएंगे कि मीना का मतलब 'मछली' होता है। पर मीना को इसके बारे में कुछ पता नहीं था, क्योंकि वह किताबें कभी पढ़ती ही नहीं थी। मीना को किताबें पढ़ने से नफरत थी।

"किताबें हमेशा बीच में अड़ंगा डालती हैं," वह कहती। शायद उसकी बात ठीक थी, क्योंकि उसके घर में हर जगह किताबें ही किताबें थीं। उसके घर में किताबें न केवल बुक-शेल्फ और मेजों पर थीं, बल्कि उन सभी जगहों पर भी थीं जहां उन्हें नहीं होना चाहिए।

जहां देखो वहीं किताबें। हर दराज में किताबें, हर अलमारी में किताबें। सोफे पर किताबें, सीढ़ियों पर किताबें। यहां तक कि आग जलाने वाली जगह पर भी किताबें। कुर्सियों पर किताबों के ढेर।

Once there was a girl named Meena. If you looked up her name in a book, you would find that it means "fish" in ancient Sanskrit. But Meena didn't know that because she never looked up anything anywhere. She hated to read, and she hated books.

"They're always in the way," she said. And this was true because in her house books were everywhere. Not just on bookshelves and bedside tables where books usually are, but in all sorts of places where books usually aren't.

There were books in dressers and drawers and desks, in closets and cupboards and chests. There were books on the sofa and books on the stairs, books crammed in the fireplace and stacked on the chairs.

एक बात और परेशान करने वाली थी। मीना के माता–पिता रोजाना और नई–नई किताबें लाते थे। वे किताबें खरीदते, दोस्तों से मांगते, लाइब्रेरी से लाते। वे हर समय– नाश्ते, दोपहर के खाने और रात के भोजन के समय भी किताबें पढ़ते। पर जब कभी भी वे मीना से पूछते कि क्या वह कोई किताब पढ़ेगी तो वह अपने पैर पटकते हुए चिल्लाती, “मुझे किताबों से नफरत है!” और जब कभी

उसके माता-पिता उसे किताबें पढ़कर सुनाने की कोशिश करते तो वह दोनों हथेलियों से अपने कान बंद कर लेती और जोर से चीखती, "मुझे किताबों से नफरत है!"

शायद पूरी दुनिया में एक और ऐसा जीव था जिसे मीना से भी ज्यादा किताबों से नफरत थी, और वह थी मीना की बिल्ली- मैक्स। जब मैक्स बहुत छोटी थी तो एक दफा उसकी पूंछ पर एक भारी-भरकम एटलस गिर गई थी। इससे मैक्स की पूंछ का सिरा मुड़ गया था। उस दिन से मैक्स ने कसम खाई थी। अब वह किताबों के ढेर के ऊपर ही बैठती, नीचे कभी नहीं।

Worse still, her parents were always bringing home MORE books. They kept buying books and borrowing books and ordering books from catalogues. They read at breakfast and lunch and dinner. But when they asked Meena if she wanted to read, she would stamp her feet and shout, "I hate books!" And when they tried to read out loud to her, she would put her hands over her ears and shout even louder, "I HATE BOOKS!"

There was probably only one person in the world who hated books more than Meena. And that was her cat, Max. A long time ago, when he was just a kitten, an atlas fell on his tail. It bent the tip like a pipe cleaner. Ever since, he's tried to stay on top of the books rather than below them.

एक दिन मीना ने सुबह वॉश–बेसिन में से किताबों को बाहर निकालकर मंजन–कुल्ला किया। फिर वह किचन में जाकर अपने और मैक्स के लिए नाश्ता बनाने लगी। उसने पहले किताबों के ढेर की एक सीढ़ी बनाई और उस पर चढ़कर कॉर्नफ्लेक का डिब्बा उतारा। जब उसने फ्रिज खोला, तो उसमें पत्रिकाएं भरी थीं। उसने

उन्हें हटाकर अंदर से दूध निकाला। उसने कुछ दूध अपने कटोरे में और कुछ मैक्स के कटोरे में डाला।

फिर वह चिल्लाई, "मैक्स! नाश्ता तैयार है।"

पर मैक्स नहीं आई। वह दुबारा चिल्लाई, "मैक्स! नाश्ता तैयार है।" फिर भी मैक्स नहीं आई।

"कहां मर गई मैक्स?" मीना सोचने लगी। उसने नहाने के टब के पीछा खोजा और फिर वाशिंग मशीन के पीछे ढूंढ़ा। उसने मैक्स को सीढ़ियों के नीचे और घड़ी के ऊपर खोजा। उसे हर जगह किताबें तो मिलीं, पर मैक्स गायब थी।

One morning, after Meena moved all the books out of the sink to brush her teeth, she went to the kitchen to get breakfast for herself and Max. First she climbed onto a stack of encyclopedias so she could reach the cereal. Then she opened the fridge and moved a pile of magazines to get the milk. She poured some for herself and some for Max.

"Max!" she called. "Breakfast is ready!" But Max didn't come. She tried again. "Max!" she called. "Breakfast is ready!" He still didn't come.

"Where could he be?" she wondered. She looked in the bathtub and behind the dryer. She looked under the stairs and on top of the clock. She found more books, but she didn't find Max.

फिर उसे दूर से 'मियाऊं!' की आवाज सुनाई पड़ी। मीना दौड़ती हुई डायनिंग रूम में गई और वहां किताबों के सबसे ऊंचे टीले पर उसे मैक्स फंसी दिखाई पड़ी। इस ढेर में वह सब किताबें थीं जिन्हें मीना के माता-पिता ने बड़े लाड़-प्यार से उसके लिए खासतौर पर खरीदा था। परंतु मीना ने उन्हें कभी खोला तक नहीं था। सबसे नीचे दबी थीं– बिना शब्दों वाली चित्रकथाएं, जिन्हें उसके बचपन में खरीदा गया था। बीच में वर्णमाला सीखने और

शिशु–गीतों की किताबें थीं। पुस्तकों के टीले के सबसे ऊपर परियों और रोमांचक घटनाओं की कहानियां थीं। सभी पुस्तकों पर धूल जमी थी।

"मैक्स घबराओ नहीं," मीना ने बिल्ली को दिलासा दिलाते हुए कहा, "मैं तुम्हें वहां से छुड़ा लूंगी!" फिर मीना उन पुस्तकों के टीले पर चढ़ने लगी। क्योंकि नीचे मोटी और जिल्द वाली किताबें थीं, इसलिए उनपर चढ़ना आसान था। मीना को यह सीढ़ियां चढ़ने जैसा लगा। परंतु जब कविताओं की एक पेपर–बैक पुस्तक पर पैर रखा तो अचानक उसका पैर फिसल गया। वह अपना संतुलन खो बैठी और तेजी से नीचे की ओर फिसली।

Suddenly she heard a loud "Meeeeyooow!" She ran into the dining room and there he was, stuck on top of the tallest stack of books in the house. It was made up of all die books her parents kept buying her and she kept refusing to read. At the bottom were big shiny picture books from when she was a baby. In the middle were alphabet books and nursery rhymes. At the top, right by the ceiling, were fairy tales and adventure stories. They were all covered in dust.

"Don't worry Max," Meena called up to him. "I'll rescue you!" She started to climb the pile of books. At first it was easy because the picture books had hard covers, and she felt as if she were climbing stairs. But when she reached the paperbacks her foot slipped on a book of poetry. She lost her balance and started to slide.

धड़ाम! एक जोरदार धमाका हुआ। सारी किताबें इधर-उधर उड़ने लगीं। पहली बार किताबों की जिल्द खुली और उनके पन्ने पलटने लगे। जैसे ही किताबें गिरीं, एक अजीब-सी बात होने लगी। किताबों में से लोग और जानवर निकलने लगे और जमीन पर गिरने लगे। वे एक-दूसरे पर गिरने लगे और इससे पुस्तकें और कुर्सियां भी इधर-उधर लुढ़कने लगीं।

CRASH! The books went flying. They fell every which way, the bindings cracking open for the very first time, and the pages flipping apart. As they fell, strange things began to happen. People and animals started falling out of the pages and tumbling to the ground. They dropped one on top of the other, scattering the books and toppling the chairs.

उनमें राजकुमार और राजकुमारियां थीं, परियां और मेंढ़क थे। फिर कहीं से एक भेड़िया और तीन सुअर भी आ टपके। हम्टी-डम्टी उड़ता हुआ मुंह के बल गिरा और उसके दो टुकड़े हो गए। उसके पीछे एक बूढ़ी औरत और बैंगनी रंग का जिराफ भी आया। इस बारात में हाथी, बादशाह, बौने, रंग-बिरंगे पक्षी और अलग-अलग प्रजातियों के बंदर भी शामिल थे।

पर सबसे ज्यादा भीड़ खरगोशों की थी। वे इधर-उधर कूद रहे थे- जंगली खरगोश, सफेद खरगोश और ऊंची टोप पहने खरगोश।

There were princes and princesses, fairies and frogs. Then, a wolf and three pigs and a troll on a log. Humpty Dumpty went flying and then broke in half, behind Mother Goose and a purple giraffe. There were elephants, emperors, emus and elves and an assortment of monkeys tangled up in themselves.

But most of all there were rabbits, falling this way and that. Wild rabbits, and white rabbits, and rabbits with hats.

मीना उन सबके बीचोंबीच बैठी थी। उसे हिलते-डुलते हुए भी डर लग रहा था। "मुझे तो लगता था कि किताबों में सिर्फ शब्द ही होते हैं, खरगोश नहीं!" उसने कहा। और तभी कहीं से छह खरगोश उसकी ओर कूदते हुए आए।

अब तो डायनिंग रूम पहचान पाना भी मुश्किल था। सारे हाथी खाने की मेज पर एक पांव पर नाच रहे थे और अपनी सूंड़ पर प्लेटें संतुलित करने की कोशिश कर रहे थे। बंदरों ने सारे पर्दे फाड़ डाले थे। वे कपड़े की पट्टियों से सिर पर पगड़ियां बांध रहे थे और सारे खरगोश मेज के पैर चबाने की कोशिश में लगे थे।

Meena sat there in the middle of it all, too surprised to move. "I thought books were full of words, not rabbits!" she said, as six more came rolling out of a book beside her.

By now, she couldn't recognize die dining room at all. The elephant was balancing on a coffee table juggling the good china plates. The monkeys had torn down the curtains and were using them as capes. And the rabbits were nibbling on die table legs.

COOKIN
KIDS

"यह सब बंद करो!" मीना चिल्लाई। "वापस जाओ!" परंतु कमरे में इतना शोर-शराबा मचा था कि किसी को मीना की बात सुनाई ही नहीं पड़ी। फिर मीना ने पास के खरगोश की गरदन पकड़कर उसे एक सचित्र कहानी की किताब में ठूंसने की कोशिश की। इससे खरगोश इतना डर गया कि वह वहां से दुम दबाकर भागा। मीना ने जब दूसरी किताब खोली तो उसमें से चार बत्तखें उड़ती हुई बाहर निकलीं। मीना डर गई और उसने झट से किताब बंद कर दी।

"इससे काम नहीं बनेगा," मीना ने कहा। "मुझे तो यह भी नहीं पता कि कौन-सा जानवर किस किताब में जाएगा।" फिर उसने एक मिनट के लिए सोचा। "अब मुझे समझ में आया," उसने कहा, "मैं हर जानवर से जाकर पूछूंगी कि वह किस किताब में रहता है।"

"Stop!" cried Meena. "Go back!" But there was so much barking and grunting and thumping going on that no one heard her speak. She grabbed the nearest rabbit and tried to stuff him into a cookbook, but that scared him so much he wriggled out of Meena's grasp and ran away. She opened another book, and four ducks flew out. She slammed it shut again.

"This won't work," said Meena. "I don't know who goes in which book." She thought for a minute. "I know," she said. "I'll go to everyone and ask them where they belong."

मीना ने एक ऐसे जीव से पूछताछ शुरू की जिसे उसने पहले कभी देखा ही नहीं था। “तुम कौन हो?” मीना ने पूछा। “अंग्रेजी का पहला अक्षर ‘ए’ आडवार्क!” उस जानवर ने थोड़ा नाराजगी के साथ कहा, और फिर वह पैर पटकता हुआ वर्णमाला वाली किताब में चला गया।

मीना को एक भेड़िया दिखा जो डायनिंग टेबिल के नीचे बैठा सिसक रहा था। पूछने पर भेड़िये ने कहा, "मैं अब कहां जाऊं? मुझे याद ही नहीं कि मैं किस किताब में से निकला था– *रेड राईडिंग हुड* या फिर *तीन छोटे सुअर* वाली पुस्तक में से?" यह कहकर भेड़िये ने मेजपोश पर अपनी नाक पोंछी। पर मीना उस भेड़िये की कोई मदद नहीं कर पाई, क्योंकि मीना ने कभी कहानियां पढ़ी ही नहीं थीं।

तभी मीना के दिमाग में एक बात आई। उसने पास रखी एक किताब उठाई और उसे जोर से पढ़ने लगी। "बहुत पुरानी बात है," मीना ने पढ़ना शुरू किया, "किसी दूर-दराज के देश में ..."

She started with one strange creature she didn't recognize at all. "Who are you?" she asked. "A is for Aardvark!" the animal said angrily, and stomped off in search of her Alphabet Book.

She found a wolf sobbing under the dining room table and asked him where he belonged. "I can't remember if I'm from Little Red Riding Hood or The Three Little Pigs!" he wailed and blew his nose on the table cloth. But Meena couldn't help him because she had never read either story.

Then she had another idea. She picked up the nearest book and began to read aloud. "Once upon a time," Meena began. "In a land far, far away ..."

धीरे-धीरे सारे जानवरों ने कूदना, नाचना, शोर-गुल मचाना बंद कर दिया। वे सब मीना के पास आकर कहानी सुनने लगे। जल्द ही सारे जानवर मीना के पास एक गोले में बैठ गए। अब मीना कहानी पढ़ रही थी और वे कहानी सुन रहे थे।

जब मीना दूसरे पन्ने पर पहुंची तब गोले में बैठे सुअर तपाक से कूदकर बोले, "यह तो हमारी कहानी है!" वे चिल्लाए, "यह तो हमारा पन्ना है! यह तो हमारी किताब है!" फिर वे गोले में से सीधे मीना की गोद में कूदे और किताब में गायब हो गए। मीना ने झट से किताब बंद कर दी। उसे डर था कि कहीं सुअर वापस न निकल आएं।

फिर उसने दूसरी किताब उठाई। धीरे-धीरे करके मीना ने अपनी सारी किताबें पढ़ डालीं। और धीरे-धीरे सारे जानवर अपनी सही पुस्तकों में वापस चले गए।

Slowly, the creatures stopped jumping and howling and gibbering and chattering. They crept closer and closer to hear what happened next. Soon they were all sitting in a circle around her, listening to her read.

When Meena reached the top of the second page, the pigs in die circle jumped up. "That's us!" they cried. "That's our page! That's our book!" They leapt up out of die circle, dove into her lap, and disappeared into the book. Meena clapped it shut before they could pop out again.

She grabbed another story. One by one she began reading all her books. And one by one the creatures found out where they belonged.

अंत में कमरे में नीली जैकट वाला केवल एक खरगोश ही बाकी बचा। अब मीना ने पीटर खरगोश वाली किताब उठाई। “कितना अच्छा हो अगर यह खरगोश मेरे पास रह जाए।” बाकी सारे जानवरों के जाने के बाद मीना थोड़ा अकेलापन महसूस कर रही थी।

वह छोटा–सा खरगोश मीना के सामने डरा–सहमा खड़ा था। भय से उसके पैर कांप रहे थे। वह भी अन्य जानवरों की तरह ही अपने घर वापस जाना चाहता था। फिर मीना ने आखिरी किताब को उठाकर खोला। किताब खुलते ही खरगोश ने छलांग लगाई और पलक झपकते ही पुस्तक में गायब हो गया।

अब घर में शांति थी। मैक्स कुछ किताबों पर बैठी जीभ से अपना चेहरा चाट रही थी। मीना ने दुख–भरी आवाज में कहा, "अब मुझे उन खरगोशों को दुबारा देखने का कभी मौका नहीं मिलेगा।"

पर तभी उसे ध्यान आया कि वे सारी किताबें तो अभी भी उसके पास थीं। फिर वह मुस्कुराने लगी।

At last, there was just one little rabbit in a little blue coat left in the room. Meena slowly picked up a book. It was The Tale of Peter Rabbit. "Maybe T could keep this rabbit with me," she thought. She was beginning to feel lonely now that everyone else was gone.

But the little rabbit stood in front of her, shifting nervously from foot to foot and twitching his fuzzy nose. He was anxious to get back home. So, with a big sigh, Meena opened the last book. The rabbit hopped in, and with a flash of his white cotton tail, he was gone.

The house was quiet. Max sat on some books washing his face. Meena sighed. "I'll never see those rabbits again!" she said.

Then she noticed that the books were still there, lying around her. She started to smile.

उस शाम जब मीना के माता-पिता वापस आए तो उन्हें अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने देखा कि सारे पर्दे फटे थे और बहुत सारे कप-प्याले टूटे थे। उन्होंने देखा कि मेज के पैर भी कुतरे हुए थे। परंतु उन्हें सबसे बड़ा आश्चर्य यह देखकर हुआ कि मीना सारी किताबों के बीचोंबीच बैठी थी। और वह सच में एक किताब पढ़ रही थी। ❒

When her parents came in that afternoon they couldn't believe their eyes. Not because the curtains were gone and the dishes were broken and the table legs were chewed up. But because there, sitting in the middle of the room, was Meena. She was reading a book. ❒

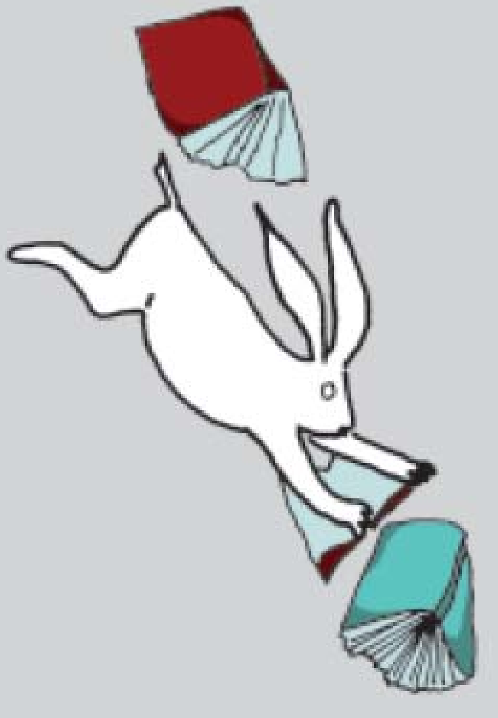

नव जनवाचन आंदोलन

मीना का घर किताबों से भरा था। लेकिन उसे किताबों से सख्त नफरत थी। परंतु एक दिन एक ऐसी अनूठी घटी जिससे वह सब कुछ बदल गया। उस दिन क्या हुआ? इस रहस्य को जानने के लिए इस सुंदर कहानी को जरूर पढ़ें।

Meena's house was full of books, but Meena hated them all. But one day a very strange incident happened which converted Meena from a book hater to a book lover. What happened? To find out read this amazing story of little Meena.

भारत ज्ञान विज्ञान समिति